Volume: 1 Issue: 12 Pages: 24-25

International Journal of Research in Academic World

E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 4.714

Received: 09/July/2022 Int. J Res. Acad. World. 2022; 1(12):24-25 Accepted: 12/August/2022

स्वतंत्रता सेनानी श्री कालीदास स्वामी एवं रचनात्मक कार्य

*1(a, b)धर्मराज, [2]जयन्त निहार बायल और [3]डॉ. कविता शर्मा

*1(a)प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, छापराड़ी, जयपुर, राजस्थान।
(b)शोधार्थी, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[2]असिसटेन्ट प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, राजस्थान।

[3]एसोसिएट प्रोफेसर, महाराज विनायक ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे योगदान प्रदान करने वाले दलित व्यक्तियों में श्री कालीदास स्वामी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महागाथा में दलितों की उल्लेखनीय भूमिका को उजागर करना है। दलितों के योगदान को उपयुक्त स्थान मिलना चाहिए और समाज में अर्न्तविरोधों से उबरते हुए एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होने को दर्शाता हैं। वास्तव में आज के दौर में उस जमाने से सीख ले सकते हैं और सभी सामाजिक तबकों को इसका शिक्षा देकर कि उनके पुरखों ने एकजुट होकर साझा शत्रु के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। इससे प्रेरणा लेकर सुदृढ़ राष्ट्र एवं समाज की विकासशील आयाम गढ़ी जा सकती है। स्वाधीनता आन्दोलन में दलितों के द्वारा सक्रिय रूप से स्वाधीनता आन्दोलन में भूमिका का निर्वहन किया है। जिसे इतिहास के अध्येयताओं को जानना जरूरी हैं। इस आन्दोलन में भारत के सभी वर्ग के लोगों के द्वारा जाति–पाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ग आदि के भेदभाव को भुलाकर कंधें से कंधा मिलाकर दलितों ने भी इस स्वतंत्रता संग्राम में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया था। इनके योगदान को इतिहास के पृष्ठों पर अंकित करने हेतु यह शोध पत्र उल्लेखित है।

मूल शब्दः विकासशील, दलित, आन्दोलन, जागीरदार, दमनकारी

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे योगदान प्रदान करने वाले दलित व्यक्तियों में श्री कालीदास स्वामी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। आपका जन्म एक सैनी समाज के किसान परिवार में श्री गिरधारी लाल स्वामी के यहाँ दिनांक 31 जनवरी, 1931 को ढ़ाणी केवलदास वाली, जैतुसर (सीकर) में हुआ था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री कालीदास स्वामी की माताजी का नाम श्रीमती पार्वती देवी था। स्वतंत्रता सेनानी कालीदास स्वामी आजीवन अविवाहित रहे। आपका परिवार सामान्य व गरीब स्थिति का था। आपने प्राथमिक शिक्षा अपने गाँव जैतुसर की सरकारी स्कूल से प्राप्त की। आपने मैट्रिक कक्षा रींगस की श्री रामानन्द पाठशाला से प्राप्त की। आप सादा जीवन व अनोखे व्यक्तित्व के धनी है। वर्तमान में कालीदास जी स्वामी अपने दत्तक पुत्र श्री भैंरूदास स्वामी व दत्तक पुत्रवधू श्रीमती पिंकी स्वामी के साथ रह रहे है।

स्वतंत्रता प्राप्ति में योगदान

मात्र 13 वर्ष की आयु में आप स्वतंत्रता सैनानी श्री बंशीधर शर्मा व श्री रामभजन स्वामी के नेतृत्व में प्रजामण्डल आंदोलन व चरखा संघ से जुड़ गये थे। प्रजामंडल आंदोलन के शेखावाटी क्षेत्र के गांवो का स्वतंत्रता आंदोलन की लडाई में किसानों एवं मजदूरों का नेतृत्व करने के आरोप में जागीरदारों के दवारा आपको दो दिवस की काठ की सजा दी एवम आपके पुश्तैनी घर को जला दिया गया आप पर एवं आपके पिताजी पर माफी मांगने का दबाव डाला गया माफी नहीं मांगने पर आपकी संपूर्ण संपत्ति एवं परिवारिक कृषि भूमि जप्त कर सन् 1942 में गाव से निष्कासित कर दिया गया गांव से निष्कासित होने के बाद आप परिवार सहित रींगस आकर बस गए स्वामी जी भारत छोडो आंदोलन के साथ जुडकर विरोध प्रदशन जुलूस निकालकर अगस्त को 1942 को सैकडों युवा क्रांतिकारियों के साथ अंग्रेजो एवं जागीरदारों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ हडताल तोड़फोड़ अंग्रेजों भारत छोडो नारेबाजी कर विरोध प्रदर्शन किया विरोध प्रदर्शन किया विरोध प्रदर्शन जुलूस पर अंग्रेजों एवं जागीरदारों के द्वारा पत्थरबाजी की गई जिसमें स्वामी जी की आँख के ऊपर चोट आई जिसका निशान अब भी मौजूद है विरोध प्रदर्शन जुलूस निकालने के आरोप में स्वामी जी को 11 चाबुक कोडे की सजा दी एवं जुर्माना लगाया स्वामी जी जुलाई 1945 में भूमिगत होकर जागीरदारों एवं अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का विरोध करते रहे जगह–जगह किसानों एवं मजदूरों का संगठन मजबूत करते रहें एवं लगभग 8 माह भूमिगत रहने के बाद 19 मार्च 1946 को तत्कालीन सीकर ठिकाने द्वारा स्वामी जी को गिरफतार कर लिया गया एवं जेल में कठोर यातनाएं दी गई चक्की पिसाई गई एवं कई दिन तक भूख प्यास एवं कई दिन तक भूखे प्यासे रखे गए माफी मांगने के लिए दबाव डाला गया लेकिन आपके द्वारा माफी नहीं मांगने पर एक महीने से भी ज्यादा समय जेल की कठोर यातनाएं सहने के बाद 13 अप्रैल 1946 को जेल से रिहा कर दिया गया जेल से रिहा होने के पश्चात् स्वामी जी स्वतंत्रता आंदोलन में अधिक सक्रिय रूप से जुड़े एवं 24 जून 1946 को दिल्ली मे प्रार्थना सभा में महात्मा गांधी जी से मुलाकात हुई, तब गांधी जी ने स्वामी जी के योगदान की सराहना की थी। 15 अगस्त 1947 को आजाद भारत का आजादी का जुलूस ग्राम रींगस में स्थानीय स्वतंत्रता

*Corresponding Author: धर्मराज

सेनानियों एवं ग्रामवासियों द्वारा निकाला गया तथा स्वतंत्रता सेनानी श्री रामस्वरूप हिंदका के नेतृत्व में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया।

सामाजिक व साहित्यिक क्षेत्र

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अनुसूचित जातियों के बच्चों को पढ़ाने के लिए रींगस में हरिजन पाठशाला चलाई। उस समय अनुसुचित जातियों के बच्चों को स्वर्ण जातियों के बच्चों के साथ बैठने की मनाही थी। इस प्रकार कठिन परिस्थितियों के बावजूद आपने दलित समाज के बच्चों को शिक्षित करने में उत्कृष्ट योगदान दिया था। इसी क्रम में आपने सन् 1958 में ग्राम जैतूसर मे ज्ञानोदय विधापीठ की स्थापना की तथा शिक्षा का प्रसार–प्रसार किया। आपकी साहित्यिक क्षेत्र में अत्यधिक रूचि थी। साहित्य में आपने शोषण एंकाकी नाटक, बालक बोध, श्री दादू चालीसा, श्री दादू पंचधाम, महात्मय व दादूनाम, शताबली नाम से किताबों की रचना कर प्रकाशित करवाई। आपने महिला सशक्तिकरण क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य सम्पादित किए।

राजनीतिक सेवा

आपने राजनीतिक क्षेत्र में विविध कार्य संपादित किए एवं विभिन्न राजनीतिक पदों पर विराजमान रहे। सन् 1954 से 1963 तक आप सीकर के केन्द्रीय सहकारी बैंक के संचालक रहते हुए सहकारी क्षेत्र मे गाँवों में सहकारिता का प्रचार प्रसार किया। दिसम्बर 1960 में आप ग्राम पचांयत जैतुसर के सरपंच पद पर निर्वाचित हुए तथा 28 वर्ष तक इस पद पर आसीन रहे। आपने नगरपालिका रींगस मे मनोनीत पार्षद के रूप में अपनी अविस्मरणीय सेवायें प्रदान की है। आप विभिन्न सामाजिक संगठनों, राजनीतिक संगठनों व अन्य सस्थाओ में विभिन्न पदों पर विराजमान रहे। आप सैनी विकास समिति, श्रीमाधोपुर के संरक्षक भी रहे है।

चित्र 1:

चित्र 2:

निष्कर्ष

आपकी सेवाओं व उपलब्धियों को ध्यान मे रखते हुए केन्द्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा विभिन्न सम्मानों व पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने आपको 09 अगस्त 2012 को शॉल व पारितोषिक देकर सम्मानित किया। एक सामान्य कृषक परिवार में जन्म लेकर अपनी प्रतिभा को इतना विकसित किया कि आज सम्पूर्ण भारत मे एक ख्यातिप्राप्त समाजसेवक के रूप मे अपनी पहचान बनाई है। उपर्युक्त वर्णित आन्दोलन में सक्रिय भूमिका व रचनात्मक कार्यों के लिए समाज व राष्ट्र आपका सदैव ऋणी रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. तारादत निर्विरोधः ''आजादी के जनक'' (राज. के स्वंतत्रता सेनानी)
2. डॉ. सुखवीर सिंह गहलोतः ''राज. का इतिहास कोश'' (चतुर्थ संस्करण)
3. अनुकृति चौहानः ''राजस्थान मे आजादी के तराने''
4. रतनलाल मिश्राः ''शेखावाटी के स्वंतत्रता सेनानी''
5. श्रीमती पूर्णिमा नवीनलालः ''स्वंतत्रता मे आन्दोलनः कुछ पहलू''
6. भगवानदास केलाः ''देशी राज्यो की जनजागृति''
7. के. एस. सक्सेनाः ''पॉलिटिकल मूवमेन्ट एण्ड अवेकनिंग इन राजस्थान''
8. जे. सी. ब्रुकः ''पॉलिटिकल हिस्ट्री .ऑफ जयपुर''
9. डॉ. सुमनेश जोशीः "राजस्थान के प्रमुख स्वंतत्रता सेनानी"
10. विनिता परिहारः "राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन"
11. जगदीश सिंह गहलोतः "राजपूताने का इतिहास"
12. बृजकिशोर शर्माः "राजस्थान में किसान व आदिवासी आन्दोलन"
13. डॉ. एच. सी. जैनः "राजस्थान में स्वंतत्रता संग्रम के सेनानी"
14. जहूर खाँ मेहरः "राजस्थान में आजादी रो आन्दोलन"